कविवर पंडित द्यानतरायजी कृत

सम्यक् रत्नत्रयधर्म पूजन

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

Sarvodayaahimsa
https://t.me/sarvodayaahimsa

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

चहुँगति फनि विषहरन मणि, दुखपावक जलधार।
शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक्-त्रयी निहार॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म !
अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म !
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अष्टक

(सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

चन्दन केशर गारि, परिमल-महा-सुगन्ध-मय।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

तन्दुल अमल चितार, वासमती–सुखदास के।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

महकैं फूल अपार, अलि गुंजैं ज्यों थुति करैं।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुत।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

दीप–रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में।
जनम–रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय मोहान्धकार–
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सम्यक् दरशन ज्ञान व्रत, शिव मग-तीनों मयी।
पार उतारन यान 'द्यानत' पूजों व्रत सहित।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सम्यग्दर्शन पूजन

(दोहा)

सिद्ध अष्ट गुनमय प्रकट, मुक्त–जीव–सोपान।
ज्ञान चरित जिहँ बिन अफल, सम्यक्दर्श प्रधान।।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन !
अत्र अवतर अवतर, संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन !
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दीप–ज्योति तमहार, घट–पट परकाशै महा।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान–सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिवफल करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(दोहा)

आप आप निहचै लखै, तत्त्व–प्रीति व्यवहार।
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार॥

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(चौपाई)

सम्यक् दरशन–रतन गहीजे,
जिन–वच में सन्देह न कीजै।
इह– भव–विभव–चाह दुःखदानी,
पर– भव भोग चहै मत प्रानी।।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(गीता)

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरु प्रभु परखिये।
पर-दोष ढकिये धरम डिगते को, सुथिर कर हरखिये॥
चहुँ संघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना।
गुन आठसों गुन आठ लहिकैं, इहाँ फेर न आवना॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहितसम्यग्दर्शनाय
जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सम्यग्दरशन ज्ञान व्रत, इन बिन मुक्ति न होय।
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव लोय।।

(चौपाई)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबन्ध कट जावै।
तासों शिव-तिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै।।
ताकौ चहुँगति के दु:ख नाहीं, सो न परे भवसागर माहीं।
जनम-जरा-मृत दोष मिटावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै।।

(चौपाई)

सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलहकारण आराधै।
सो परमातमपद उपजावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै।।
सोई शक्र–चक्रिपद लेई, तीनलोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै।।

(चौपाई)

सोई लोकालोक निहारे, परमानन्ददशा विसतारे।
आप तिरै और न तिरवावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्राय
समुच्चयजयमाला अनर्घ्यपदप्राप्तये
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

एक स्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय॥

ॐ पुष्पांजलिं क्षिपेत्